रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी

Rambhau Mhalgi Prabodhini

स्वैच्छिक - कार्य - संगम

राष्ट्रीय परिषद

दि. 2–3 जून, 2008

प्रतिवेदन

स्वैच्छिक कार्यक्षेत्र के सम्मुख खडी चुनौतियाँ दिन प्रतिदिन गंभीर होती दिखायी दे रही है। दुर्भाग्यवश, इन चुनौतियों के विषय में व्यापक चर्चा का भी अभाव है। इस संदर्भ में, स्वैच्छिक कार्यक्षेत्र के सम्मुख इन सभी चुनौतियों की व्यापक चर्चा हो तथा चुनौतियों का सामना करने की रणनीती बने इस दृष्टीसे रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी के तत्वावधान में देशभर की कुछ चुने हुए विषयोंपर कार्य करनेवाली स्वैच्छिक संस्थाओं की एक राष्ट्रीय परिषद का आयोजन **"स्वैच्छिक-कार्य-संगम"** के रुप में **दि. 2, 3 जून, 2008** को किया गया था। यह कार्य- संगम मुंबई के निकट प्रबोधिनी के ज्ञान-नैपुण्य केंद्र, केशवसृष्टी, उत्तन, भाईंदर (पश्चिम) में संपन्न हुआ।

इस कार्य-संगम में महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, तामिळनाडू, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगड, ओरिसा,दिल्ली और गोवा आदि 13 राज्योंसे 84 संस्थाओंके 152 प्रतिभागी सम्मिलित हुए । वनवासी कल्याण आश्रम के श्री. कृपाप्रसाद सिंग, श्री. हर्ष चौहान, हिमाचल प्रदेश के वनसंपदा मंत्री श्री. जगतप्रसाद नड्डा, भाजपा–एन.जी.ओ. विभाग के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री. सुधीर अग्रवाल, राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्या श्रीमती निर्मला सीतारामन्, ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती ललिथा कुमार मंगलम् तथा राष्ट्रीय समाज कल्याण बोर्ड़ की भूतपूर्व अध्यक्षा और **"पाँचवा स्तंभ"** मासिक की संपादिका श्रीमती मृदुला सिन्हा, आदि महानुभव विशेष रुपसे संमिलित हुवे।

इस "स्वैच्छिक कार्य संगम" में –

१. ग्रामविकास
२. महिला सबलीकरण तथा बालकल्याण
३. पर्यावरण एवंम् जलसंसाधन
४. वनवासी विकास
५. स्वास्थ्य

आदि विषयोंसे संबंधित संस्थाओंके संचालक और प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। परिषद में संपन्न "उद्योग जगत्का समाज के प्रति दायित्व" इस विषय के सत्र में उद्योगजगत् के कुछ महानुभाव भी उपस्थित रहे।

उद्घाटन - सत्र

इस राष्ट्रीय परिषद की संकल्पना प्रबोधिनीकी व्यवस्थापन समिती सदस्या मा. डॉ. मेधा नानिवडेकरने प्रतिभागियोंके सम्मुख रखी। उन्होंने कहा की, स्वैच्छिक कार्य के विषय में अलग दिशा में जो प्रयास सभी संस्थाए अपनी-अपनी जगहपर कर रही है, उनकी शक्तियोंको जोडकर निहित दिशा में ले जाना यही इस कार्य संगम का उद्देश है। प्रथम दिन उद्घाटन सत्र के अलावा, विषय प्रवर्तन और दो सत्रोंमें सामुहिक चर्चा का आयोजन किया गया।

परिषद का उद्घाटन वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता तथा पुणे स्थित अफार्म (AFARM) संस्थाके संस्थापक अध्यक्ष डा. मुकुंद घारे व्दारा किया गया। उद्घाटनपर भाषण में उन्होनें अपनी संस्कृतिकी सामाजिक विरासतपर रोशनी डाली। उन्होंने कहा की जहा सरकार नहीं पहुँच सकती वहा स्वयंसेवी संस्थाएं जाकर सेवाकार्य कर रही है। लोगोंकी इच्छा आकांक्षाओंको जानकर उन्हे अपनी सेवा देना और उनका जिवनस्तर ऊँचा करने के लिए सहायता करना, यह हेतु सामने रखकर सेवाकार्य करना चाहिए। उनका मत था की इस के साथ ही स्वयंसेवी संस्थाओं को आत्मपरीक्षण करके अपने कार्य के लिए नयी दिशा खोजनी चाहिए। यह कार्य सावधानीसे करने की आवश्यकता है। इस स्वयंसेवी कार्य को निरंतरता से चलाने के लिए उनकी कार्यशैली में दूरदर्शिता, मूल्यव्यवस्था, निरंतरता, संगठन आदि विशेषताओं का समावेश हो तो स्वयंसेवी कार्य शाश्वत रुप से कार्य कर सकता है , ऐसा विश्वास उन्होने व्यक्त किया।

विषय प्रवर्तन भाषण (Key Note) :

परिषद के प्रथम दिन के दुसरे सत्र में म्हाळगी प्रबोधिनी के महानिदेशक श्री. विनय सहस्त्रबुद्धेने अपने विषय प्रवर्तन में अपनी सनातन संस्कृती में धर्म और मंदिरसे जुडी दान की प्राचीन परंपरा को उद्धृत किया । उन्होंने कहा कि यह हमारी गलतफहमी है कि हमारी परंपरा में स्वयंसेवा की विरासत नहीं है । हमारे धर्म का यह अविभाज्य हिस्सा है। (It is an integral part of our religious duty). समाज की सरकार के प्रति अवलंबिता कम करके उसे आत्मनिर्भर बनाना ही स्वयंसेवी संस्थाओं का उद्देश होना चाहिए । इस उद्देश की परिपूर्ति के लिए दृष्टी एवं् लक्ष्य की (व्हिजन और मिशन) संकल्पनाएं स्पष्ट होनी चाहिए। इसलिए स्वयंसेवी संस्थाओंके हर एक कार्य को अनुसंधान-आधारित होना चाहिए। हमारे कार्य में लोकाभिमुखता, पारदर्शिता, परिणामाभिमुखता, प्रस्तुतिकरण कुशलता (Presentation Skill), व्यवस्थापन आदि आधुनिक संकल्पनाओंका त्याग, निष्ठा , समर्पण आदि परंपरागत मूल्यों से मेल हो। हमारा कार्य व्यक्ति केंद्रित न होकर विषय और संस्था केंद्रित हो जाए तो स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्य को एक नयी दिशा मिल सकती है।

समूह चर्चा- प्रथम भाग :

प्रथम दिन के भोजनोत्तर सत्र में छ: विषयोंपर अलग-अलग समूह बनाए गए और उनमें समूह चर्चा का आयोजन किया गया। समूह चर्चा के ग्रामविकास समूह में 29 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और उसका संचालन रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनीके श्री. यशवंत ठकारने किया। महिला सबलीकरण तथा बालकल्याण इस समूह में 27 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और उसका संचालन प्रबोधिनीकी व्यवस्थापन समितीकी सदस्या डा. मेधा नानिवडेकर और दिल्लीकी श्रीमती शोभा गुप्ता इन्होंने किया। पर्यावरण एवंम् जलसंसाधन में 21 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए

और उसका संचालन विवेकानंद केंद्र के श्री. जी. वासुदेव, ठाणे शहरके श्री. विद्याधर वालावलकर तथा पुणे स्थित श्री. नीलेश कुलकर्णीने किया । स्वास्थ्य समूह में 23 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और उसका संचालन भोपाल के डा. हितेश वाजपेयी और हिमाचल प्रदेश की श्रीमती मल्लिका नड्डाने किया। वनवासी विकास समूह में 27 प्रतिनिधि सम्मिलित थे तथा श्री. कृपा प्रसाद सिंगजीने चर्चा का संचालन किया, और विभिन्न सामाजिक कार्यसे संबंधित अन्य समूहमें 23 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और उसका संचालन अवनी कन्सल्टन्सी के निदेशक श्री. विवेक अत्रे और श्री. सुधीर अग्रवालने किया।

समूहचर्चा के प्रथम भाग में चर्चा किये गये विचार बिंदू

१. संस्था संचालनके संदर्भमें चुनौतिया
२. संस्थाओंके लक्ष एवं ध्येय के बारे में स्पष्टता
३. कार्यालयीन व्यवस्था, प्रचार–प्रसिद्धी, वित्तिय अनुशासन
४. प्र-लेखन
५. प्रशासनिक समस्याएँ एवं लक्ष्य के प्रति मूल्यांकन

इन विषयोंपर चर्चा हुई। चर्चा का स्वरुप सभी प्रतिभागियों का आपस में परिचय और संस्थाओं के संचालन में आ रही विभिन्न चुनौतियों को समझना तथा उनका सामना करने में आनेवालें अनुभवोंका आदान-प्रदान करना रहा । प्रतिभागियों की समस्यांओं को हल करने के लिए, संस्था के लिए और संस्थाओंमें कार्यशैली के अभाव को केंद्रित करते हुए चर्चा प्रवर्तको द्वारा सुझाव दिए गए।

<u>समूह चर्चा- दुसरा भाग :</u>

समूहचर्चा के दुसरे भाग में चर्चा किये गये विचार बिंदू

1. प्रचार –प्रसार का अर्थ (Networking)
२. प्रचार –प्रसार की आवश्यकता,कार्यपद्धती
३. स्वयंसेवी संस्थाओंका आपसी समन्वय
४. म्हाळगी प्रबोधिनी जैसे संस्थाकी भूमिका इन बिंदुओंपर चर्चा हुई।

आपसी समन्वय की आवश्यकता में किन मुद्दों का समावेश हे। आपसी समन्वय की कार्यपद्धति और तरीके कैसे होने चाहिए ? इन महत्वपूर्ण मुद्दों को केंद्रित रखकर समूह चर्चा का संचालन किया गया।

<u>स्वैच्छिक कार्य के अभिनव प्रयास</u>

परिषद के दूसरे दिन के प्रथम सत्रमें अहमदनगर के श्री. पोपटराव पवार, लातूर के श्री. संजय कांबळे, मध्यप्रदेश के श्री. हर्ष चौहान, हिमाचल की श्रीमती मल्लिका नड्डा आदिने प्रस्तुतिकरण किये। उनमें **जन आधार सेवाभावी** संस्था, लातूर-महाराष्ट्रके, श्री. संजय कांबळेने सॉलिड वेस्टे मॅनेजमेंट (Solid Waste Management) प्रकल्प के विषयमें एक अनुबोधपट प्रदर्शित किया। उन्होंने जनाधार सेवाभावी संस्था लातूर के माध्यम से कुष्टरोग से मुक्त व्यक्ति (जिनको समाज अभी भी स्वीकार नही कर रहा है) और कूडा-कचरा उठाने वाले लोगोंका संगठन किया है। उन्हे निश्चित रुप से रोजगार देने का प्रबन्ध भी किया है।

समाज के इन उपेक्षित घटकों को खुद की पहचान और आत्मसम्मान से जीने का अवसर मिला। कूडा-कचरे पर पुन: प्रक्रिया (Recycling) करके ये संस्था पर्यावरण प्रदूषण को रोकने का भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है।

श्री. पोपटराव पवार महाराष्ट्रके अहमदनगर जिले के हिवरे बाजार गाव के सरपंच है। उनके गांवकी सबसे बडी समस्या पानी की थी। उसको सुलझाने के लिए उन्होने विशेष प्रयत्न किये। गाव के भू-जल स्तर को बढाने में सफलता प्राप्त की। खेती और खेती–पूरक उद्योगोंका विकास करके लोगोंका जीवनस्तर उँचा उठाया, जिसके लिए उनके गाव को भारत सरकार ने निर्मल ग्राम पुरस्कार प्रदान किया है।

गाव का समग्र विकास करने का संकल्प पूरा करने के लिए कुछ कार्यक्रमोंका संचालन करना आवश्यक था जैसे, शादी के पूर्व एच.आय.व्ही.टेस्ट अनिवार्य (Test Compulsory) करना, संगणक साक्षरता, रोजगार निर्माण, ऊर्जा बचत, वृक्षारोपण इन उपक्रमों का अवलंबन ग्राम पंचायत के निर्णय से किया गया। एक आदर्शगाव होने के नाते उन्होने अगले पचास साल की योजना बनाई है। 2008 के अंत तक पूरा गाव संगणक साक्षर बनाने का लक्ष्य उनके सामने है।

डा. मल्लिका नड्डा, चेतना संस्थान के माध्यम से हिमाचल प्रदेश के मानसिक विकलांग क्षेत्र में कार्यरत हैं। चेतना संस्थान द्वारा मानसिक विकलांगो के लिए स्पेश्यल डे केअर सेंटर (Special Day Care Center) चलाया जाता है। स्वास्थ्य जागृति शिविर, विकलांगो की माताओंका बचत गट, महिला शक्ति केंद्र, कन्या बचाव आन्दोलन और विकलांग छात्रों को विशेष खेल महोत्सव में प्रतिनिधित्व करने में सहायता और प्रशिक्षण देना आदि विभिन्न क्षेत्रोंमे उनकी संस्था कार्यरत है।

वनवासी कल्याण आश्रम, मध्यप्रदेश के श्री. हर्ष चौहान समग्र ग्रामविकास के माध्यम से वनवासी जिलोंके पुनवर्सन का कार्य कर रहे है।

हैद्राबादकी ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता तथा इस सत्रकी अध्यक्षा श्रीमती निर्मला सीतारामन ने इस प्रस्तुतिकरण सत्रका समापन किया। उन्होंने कहा कि प्रस्तुतिकरण करनेवाला हर व्यक्ति स्वयंप्रेरित है। हम अपने कार्य मे जितना दूर जा सके उतना दूर अवश्य जाए ताकि हम समस्याओंका हल निकाल सकें । सरकार जो योजना बनाती है उसके परिणाम समाज के उच्च वर्ग से संबंधित होते है। लेकिन स्वंयसेवी संस्थाओंका कार्य समाज के निचले वर्गतक होने के कारण विशेषरुप से कार्य करने वाली संस्थाओं में अपने अनुभवोंका आदान-प्रदान सरकार के योजना आयोग के साथ करना चाहिए। हमे मनुष्य विकास निर्देशांक (Human Development Index) नही तो मनुष्य कल्याण निर्देशांक (Human Welfare Index) को ऊँचा उठाने के लिए कार्य करना चाहिए। सफलतापूर्वक कार्य करनेवाले गाव या संस्थाओंका दौरा करने वाले लोंगो से उनके कार्यपद्धती में विकार आ सकता ह। उन्होने इसके प्रति सावधान भी किया। इस सत्र का संचालन प्रबोधिनीके कार्यकारी अधिकारी श्री. मिलिंद आरोलकरने किया।

<u>कारपोरेट जगत का सामाजिक दायित्व (CSR)</u>

परिषद का समारोप पूर्व सत्र कारपोरेट जगत का सामाजिक दायित्व (Corporate Social Responsibility) विषय से संबंधित रहा। इस सत्र का संचालन श्री. सुधीर अग्रवालने किया। इस सत्र में स्वयंसेवी संस्था और कंपनियोंके प्रतिनिधियोंको एक ही मंच पर लाकर उन्हे आपसी संबंधों में विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस सत्र में इंडियन एन.जी.ओज. डॉट कॉम पोर्टल को चलानेवाले श्री. संजय बापट, श्रीमती ललिथा कुमारमंगलम् (भाजपा), एस्सेल समूह के श्री. अशोक गोयल इन महानुभावोंका सहभाग रहा । तथा सत्र की अध्यक्षा श्रीमती मृदुला सिन्हा थी।

इंडियन एन.जी.ओज. डॉट कॉम पोर्टल के कार्यकारी निदेशक श्री. संजय बापटने कारपोरेट (Corporate) जगतका समाज के प्रति बढते हुए सहकार्य के विषय का विवेचन किया। उन्होंने कहा, कारपोरेट (Corporate) और स्वैच्छिक संस्थाए अपनी परस्पर आवश्यकताओं को मद्दे नजर रख कर सहयोग कर सकते है। स्वयंसेवी संस्थाओंको कारपोरेट (Corporate) जगत के हर एक विभाग से अपना कार्य जोडना चाहिए। गव्हर्नन्स, फायनान्स, मार्केटिंग,एच.आर. (H.R) इन विषयमें कारपोरेट, स्वैच्छिक संस्था की सहाय्यता कर सकते है। देश के इतिहास में भी कारपोरेट जगत का सामाजिक दायित्व (Corporate Social Responsibility) के उदाहरण है। स्वैच्छिक संस्था और कारपोरेट में शाश्वत संबंध प्रस्थापित होने से ही हम विकास की ओर जा सकते है।

इसी सत्र में श्रीमती ललिथा कुमारमंगलम्, तामिलनाडू के देहविक्रय करनेवाली महिलाओंके पुनवर्सन कार्य के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने सी. एस. आर. (C.S.R.) में जो एक तरह की खाई बन गई है, उसे कम करने के लिए कुछ सूचनाएँ दी। स्वैच्छिक संस्था और कारपोरेट (Corporate) के आपसी संबंधो में विश्वास होने की जरुरत है। इसलिए स्वैच्छिक संस्था को अपनी प्राथमिकता निश्चित करके अपने आत्मसम्मान को कायम रख कर अपने कार्य में पारदर्शिता और परिणामाभिमुखता (Result Orientation) लाना चाहिए।

एस्सेल वर्ल्ड समूह के श्री. अशोक गोयलजी ने कारपोरेट (corporate) समूह के प्रतिनिधिके नाते कारपोरेट (corporate) समूह की स्वैच्छिक संस्थाओं के बारे में अपेक्षाए व्यक्त की। उन्होने बताया की स्वैच्छिक संस्था के कार्य में पारदर्शिता और परिणामाभिमुखता (Result Orientation) हो तो कारपोरेट (corporate) के मन में उनके प्रति विश्वास उत्पन्न होगा। सी. एस. आर. (CSR) कोई नई संकल्पना नही है, यह तो अपनी संस्कृति की विरासत है। स्वयंसेवी कार्य में शाश्वतता तब आ जाएगी जब व्यक्ति नही बल्कि संस्था महत्त्वपूर्ण होगी।

इस सत्र का समापन श्रीमती मृदुला सिन्हाजी के अध्यक्षीय भाषणसे हुआ । उन्होंने बताया कि प्रबोधिनी का काम केवल संगठन करना ही नही है बल्कि उसका दायित्व इस विचार–प्रवाह में व्यक्त हुए विचार–

बिंदुओंको छोटी स्वयंसेवी संस्थाओ, कारपोरेट संस्थाए तथा सरकार तक संपर्क सूत्र के रुपसे पहुचाना है। उन्होंने कहा की हमने एन.जी.ओ.(NGO) कहना छोड देना चाहिए, क्योकि हमे सरकारपर अवलंबित नही रहना है। हमे स्वयंपूर्ण बनना है। इसलिए एन.जी.ओ. (NGO) से ज्यादा स्वयंसेवी संस्था इस शब्द का प्रयोग अधिक उचित रहेगा। स्वयंसेवी संस्थाओंने कभी भी खुद को कम नहीं समझना चाहिए। अपने आत्मसम्मान को कायम रखते हुए ही हम स्वयंसेवी संस्थाओंपर होती हुए टिप्पणी का जवाब दे सकते है। अपने देश की गणतंत्र– शासन–व्यवस्थाको जीवित रखने के लिए स्वयंसेवी संस्थाओंका सक्रिय रहना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इस कार्य के लिए प्रबोधिनीके माध्यम से बार-बार प्रबोधन कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

<u>समूह चर्चा सत्रका प्रतिवेदन</u>

सभी समूहोंके प्रतिनिधियोंने दि. 2 जून 2008 को अपने समूह मे हुई चर्चा के विचारार्थ बिंदुओंका संक्षेप मे प्रतिवेदन किया।

<u>सभी समूहों के प्रस्तुतिकरण में आए कुछ समान बिंदू:</u>

१. स्वयंसेवी संगठनोंके कार्यकर्ताओंकी कार्यक्षमता बढाने के लिए स्थानीय स्तर पर सुविधाओंका अभाव है।
२. स्वयंसेवा करनेवाले अनेक कार्यकर्ता है, लेकिन समर्पित और कुशल कार्यकर्ताओंकी संख्या कम होती जा रही है।
३. आपसी समन्वय के बारे में और संस्था के कार्य के प्रचार–प्रसार के बारें में संस्थाओं के संम्मुख बहुत सारी चुनौतिया है।
४. संस्थाओं का कार्य अच्छा है लेकिन कार्य के मूल्यांकनकी व्यवस्था का तथा कार्य के प्रलेखन की रचना का (Documentation) गहरा अभाव है ।
५. समूह चर्चा के हर एक प्रवर्तक ने सेवाकार्य से जुडी हुई स्वयंसेवी संस्थाओं का संगठन बनाने की आवश्यकता जताई और इच्छा व्यक्त की, कि रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी को संस्थाओंके अभिभावक के रुप में भूमिका निभानी चाहिए।

सत्रका समापन भोपालके सामाजिक कार्यकर्ता डॉ.हितेश वाजपेयी ने किया।

कार्य–संगमके समापन सत्र में कारपोरेट (Corporate) जगत के कुछ महानुभावोंका जो अनेक वर्षोसे सामाजिक कार्यसे जुडे है, उनके इस सेवाभाव के प्रति अभिवादन के रुपमें प्रबोधिनी के द्वारा मानचिन्ह देकर उनका सम्मान किया गया। कॅम्लिन कंपनी (Camlin Company)के सुभाष दांडेकर की ओर से श्रीराम दांडेकर, आयफ्लेक्स सोल्यूशन्स के श्री. दीपक घैसास, नई मुंबईके सुप्रसिद्ध बिल्डर श्री. सुरेश हावरे, एक्सेल इंडस्ट्रीजकी प्रतिनिधि श्रीमती आशाबेन श्रॉफ, जेटकिंग के सुरेश भारवानी आदि महानुभवोंका सम्मान किया गया। यह सभी व्यक्ति सेवाकार्य से बरसों से जुडे हुए है। इस सम्मान कार्यक्रम तथा समापन सत्र का अध्यक्ष स्थान केशव सृष्टि के अध्यक्ष श्री. मुकुंद चितळे ने विभूषित किया था। इस समय प्रबोधिनीके व्यवस्थापन समिति की श्रीमती रेखा महाजन और श्री. अरविंद रेगे भी उपस्थित थे।

इस सत्रके अंत में उद्योग जगत के प्रतिनिधि के रुप में श्री. सुरेश हावरेने उद्योग- जगत के प्रतिनिधींयोकी ओर से विचार व्यक्त किये। अपने स्वयं के समाज कार्य का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि, समाज कार्य करने के लिए सबको घर छोडकर गाव जाने की जरुरत नही है। उन्होंने प्रबोधिनी के प्रति आभार व्यक्त किया क्योंकि इस राष्ट्रीय परिषद के माध्यमसे सी. एस. आर. (CSR) के महत्त्व से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया।

इस दो दिवसीय परिषद का सिंहावलोकन करते हुऐ म्हाळगी प्रबोधिनी के महानिदेशक श्री. विनय सहस्रबुद्धेने कहाँ की, आज के युग में स्वयंसेवी संस्था एक ताकद बन गयी है। सरकारकी कोई भी नीति बनाने से पहले स्वयंसेवी संस्थाओंके बारे में सोचना ही पडता है। स्वैच्छिक कार्यकी ताकत का उपयोग करनेकी सकारात्मकता हमें स्वीकारनी ही होगी। समय के परिवर्तित परिवेश में आधुनिक और परंपरागत मूल्यों के मेल से कार्य करके स्वयंप्रेरित और स्वयंसिद्ध बनना, यही स्वैच्छिक संस्थाओंसे समय की मांग है। इसके लिए हमे संगठित होकर कार्य करना चाहिए।

इस राष्ट्रीय परिषद का समापन केशव सृष्टी के अध्यक्ष और प्रतिथयश लेखा परिक्षक (Chartered Accountant) श्री. मुकुंदराव चितळे इन्होंने किया। उन्होंने, स्वैच्छिक संस्थाओंको आत्मपरिक्षण करके अपने कार्य का स्वयं-मूल्यांकन करनेकी आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा की देश के विभिन्न प्रदेशोंमें विभिन्न विषयोंपर कार्य करनेवाले संगठनोंका राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन होना चाहिए। हम में से कुछ संस्थाओंको राष्ट्रीय स्तर पर प्रातिनिधिक रुपमें कार्य करना चाहिए। स्वयंसेवी संस्थाओंद्वारा अपना अनुभव, ज्ञान, कार्यपद्धति इनका आदान-प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। अपनी कार्यक्षमता, पारदर्शिता,कार्यगुणवत्ता बढाने के लिए समाज की उनके प्रति अपेक्षाए और उनका कार्य इनमें मेल होना आवश्यक है। इस कार्य के लिए रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी प्रमुख भूमिका निभा सकती है, ऐसा विश्वास उन्होने जताया।

****